

डॉ. जॉन ओसवाल्ट, होशे, सत्र 12, होशे 13

© 2024 जॉन ओसवाल्ट और टेड हिल्डेब्रांट

फ्रांसिस एस्बरी सोसाइटी (विल्मोर, केवाई) और डॉ. ओसवाल्ट को इन वीडियो को जनता के लिए निःशुल्क उपलब्ध कराने और उनके प्रतिलेखन की अनुमति देने के लिए धन्यवाद।

आज रात आप सभी को यहाँ देखकर अच्छा लगा। आने के लिए धन्यवाद। हम पुस्तक के मुख्य भाग के तीसरे भाग में अध्याय 13 को देख रहे हैं, जिसे मैंने नो टुथ, नो फेथफुलनेस नाम दिया है।

हमने अध्याय 4, 5 और 6 में प्रभु के बारे में कोई ज्ञान नहीं देखा है, और हमने अध्याय 6 से 10 या 11 में प्रभु के लिए कोई दृढ़ प्रेम नहीं देखा है, और अब प्रभु के प्रति कोई वफ़ादारी नहीं है। जब एप्रेम बोलता था, तो लोग काँप उठते थे। वह इस्राएल में ऊँचा था, लेकिन वह बाल की पूजा करने का दोषी था और मर गया।

अब वे और भी ज़्यादा पाप करते हैं। वे अपने लिए चाँदी से बनी, चतुराई से गढ़ी हुई मूर्तियाँ बनाते हैं, ये सब कारीगरों का काम है। इन लोगों के बारे में कहा जाता है कि वे मानव बलि चढ़ाते हैं।

वे बछड़े की मूर्तियों को चूमते हैं। श्लोक 1, इसका पहला भाग, उस प्रभाव के बारे में बताता है जो कभी एप्रेम के पास था। वे इस्राएल में महान थे।

बाकी आयत के अनुसार क्या हुआ? वे मूर्तियों की ओर मुड़े। वे बाल की ओर मुड़े, और मैं आपको फिर से याद दिला दूँ कि बाल, अन्य चीजों के अलावा, तूफान के देवता हैं। और जैसा कि मैंने कहा है, इज़राइल के पास यूफ्रेट्स या नील जैसी कोई बड़ी नदी नहीं है जिसका उपयोग वे सिंचाई के लिए कर सकें।

इज़राइल के लिए, सब कुछ भूमध्य सागर से आने वाले उन तूफानों पर निर्भर है, और जैसे ही वे उस केंद्रीय रिज पर आते हैं, अपनी वर्षा गिराते हैं। इसलिए, तूफान के देवता को शांत करना महत्वपूर्ण है। उसे अपने पक्ष में रखना महत्वपूर्ण है।

श्लोक 1 के भाग 1 और भाग 2 के बीच क्या संबंध है? पहले और बाद में। बिल्कुल। और बाद में क्यों, जबकि पहले? हाँ, जब उन्होंने परमेश्वर की सेवा की, परमेश्वर ने उन्हें आशीर्वाद दिया, और फिर उन्होंने परमेश्वर से मुँह मोड़ लिया।

लेकिन फिर, इसका क्या संबंध है? हाँ, हाँ। जब एप्रेम बोलता था, तो लोग काँप उठते थे। इस्राएल में उसका सम्मान किया जाता था।

इस और बाकी श्लोक के बीच क्या संबंध है? घमंड। ओह, मुझे भगवान की जरूरत नहीं है। मैं बहुत अच्छा कर रहा हूँ।

लोग मुझसे प्रभावित हैं। लोग मेरी बात सुनते हैं। लोग वही करते हैं जो मैं कहता हूँ।

मुझे ईश्वर की आवश्यकता नहीं है। पॉल क्या कहता है? बहुत से शक्तिशाली नहीं, बहुत से महान नहीं, बहुत से बुद्धिमान नहीं। क्यों नहीं? क्योंकि उन्हें ईश्वर की आवश्यकता नहीं है।

वे ठीक-ठाक चल रहे हैं, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। बार-बार, यह उन क्षणों में होता है जब हम असफल होते हैं, उन क्षणों में जब जीवन बिखर जाता है। जैसा कि वे कहते हैं, लोमड़ी के बिलों में कोई नास्तिक नहीं होता।

बिल्कुल, बिल्कुल। उन्हें नहीं पता था कि उन्हें भगवान की ज़रूरत है, जैसे हमें नहीं पता। फिर से, मैं बहुत सोच रहा हूँ।

मैंने पिछले सप्ताह कॉलेज में डॉ. ब्राउन के भाषण का ज़िक्र किया था, जिसमें उन्होंने चर्च से दूर रहने वालों के बारे में बताया था। मैं इस बारे में काफ़ी सोच रहा हूँ। इन लोगों ने अपना विश्वास नहीं खोया है।

उन्हें यह बिल्कुल भी ज़रूरी नहीं लगा। भगवान की ज़रूरत किसे है? मैं ठीक हूँ। चर्च की ज़रूरत किसे है? चर्च के लोगों की ज़रूरत किसे है? यीशु की ज़रूरत किसे है? मैं ठीक हूँ।

कई साल पहले, मैंने एक छोटा सा अंश देखा था। छात्रों को पता चला कि उनके प्रोफेसर कभी बहुत ही कट्टर ईसाई थे, और अब वे स्पष्ट रूप से कट्टर ईसाई नहीं रहे, और उन्होंने उनसे पूछा, आपने अपना विश्वास कैसे खो दिया? उन्होंने कहा कि मैंने वास्तव में इसे नहीं खोया। उन्होंने कहा कि जब मैं ग्रेजुएट स्कूल गया, तो मुझे पता चला कि मेरे पास उनके लिए बहुत समय नहीं था और मुझे वास्तव में उनकी ज़रूरत नहीं थी, इसलिए मैंने अपना विश्वास एक दराज में रख दिया।

कुछ साल बाद, मैंने सोचा कि शायद थोड़ा सा विश्वास रखना अच्छा रहेगा, और मैं दराज के पास गया और उसे खोला। वहाँ कुछ भी नहीं था। मुझे भगवान की ज़रूरत नहीं है।

और कई बार, यह त्रासदी, संकट ही है जो हमें यह कहने के लिए मजबूर करता है, हे भगवान, मैं ईश्वर के बिना नहीं रह सकता। इसलिए, मुझे लगता है कि कई मायनों में, यह एक बहुत ही शक्तिशाली श्लोक है। जब उन्हें ऊंचा किया गया, तो वे मुड़े, और बाइबल इस बात को बार-बार दोहराती है।

मूर्तियाँ, और मैं कहना चाहता हूँ कि मूर्ति देवता, हमारे हाथों की कृतियाँ हैं, और मैं उससे एक कदम आगे जाना चाहता हूँ। वे हमारे दिमाग की कृतियाँ हैं। हमने सिर्फ़ छवि ही नहीं बनाई है। हमने विचार भी बनाया है।

यह एक ऐसा ईश्वर है जो हमारे लिए मौजूद है। अब, फिर से, मैं उस आयत के दूसरे भाग को देखना चाहता हूँ। वे बाल पूजा, एक मानव निर्मित धर्म के दोषी बन गए, और मर गए।

हुह? इसमें क्या संबंध है? आध्यात्मिक रूप से, वे मर गए? हाँ। अब, क्यों? यह मृत्यु की ओर क्यों ले जाता है? बाल जीवन प्रदान नहीं कर सका। बाल वह नहीं दे सका जो उन्हें वास्तव में चाहिए, जिसकी आपको और मुझे वास्तव में आवश्यकता है।

अब, आइए इस पर थोड़ा और विस्तार से विचार करें। क्यों नहीं? खैर, वह ईश्वर नहीं है, हाँ। हमारे हाथों के काम और हमारे दिमाग के काम जीवन की ओर क्यों नहीं ले जाते? ठीक है, यह हमें सोचने पर मजबूर करता है कि हम जीवन का स्रोत हैं।

और क्या? ठीक है, ठीक है। और क्या? ठीक है, ठीक है। जीवन का एकमात्र स्रोत ईश्वर है।

हम जीवन का निर्माण नहीं कर सकते। अब, यह बहुत दिलचस्प होने वाला है। हम में से ज्यादातर लोग शायद इसे नहीं देख पाएँगे, लेकिन आप में से कुछ लोग इसे देख पाएँगे।

मुझे लगता है कि अगर यीशु अब से 100 साल बाद देरी करते हैं, तो दुनिया इस आवाज़ को प्रतिशोध के साथ साबित कर सकती है। यह बहुत अच्छी तरह से आशीर्वाद नहीं बन सकता है। अब, मैं गलत साबित होना चाहता हूँ, और शायद मैं गलत साबित हो जाऊँगा, लेकिन मेरी समझ यह है कि मानवता की पतित प्रकृति को देखते हुए, हम जो कुछ भी पैदा करते हैं, उसका एक हिस्सा मृत्यु-दायक होगा।

कागज़ पर देखा जाए तो साम्यवाद एक बेहद सुंदर राजनीतिक सिद्धांत है। यह हर तरह से समझ में आता है, और यही वजह है कि उभरते देश इसके झांसे में आते रहते हैं, लेकिन यह एक बात को छोड़ देता है: हमारा पतनशील स्वभाव। हम सभी समान हैं, और हममें से कुछ लोग दूसरों की तुलना में थोड़े ज़्यादा समान हैं।

इसलिए, राज्य के खत्म होने के बजाय, राज्य कुछ चुनिंदा लोगों के हाथों में सर्वशक्तिमान बन गया। हम जीवन का उत्पादन नहीं कर सकते। अपने आप पर छोड़ दिए जाने पर, हम मृत्यु का उत्पादन करते हैं।

ऐसा लगता है कि ऐसा नहीं है, और लोग हर समय इसे नकारते रहते हैं, लेकिन हर पीढ़ी इसे फिर से साबित करती है। 20वीं सदी 19वीं सदी का जवाब थी, और 19वीं सदी, कई मायनों में, होशे 13 1a है। यूरोप ने दुनिया को पूँछ से पकड़ रखा था।

पता चला कि यह एक साँप की पूँछ थी, लेकिन हमने इसे समझ लिया था। हमें सब कुछ समझ आ गया था। तर्कसंगतता ने हमारी सभी समस्याओं का उत्तर दे दिया था और बची हुई मुट्ठी भर समस्याओं का उत्तर देने जा रही थी।

अब और कोई युद्ध नहीं हो सकता क्योंकि हर कोई समझता है कि युद्ध विनाशकारी है, और हम खुद को नष्ट करने के लिए बहुत चतुर थे। और इसके बजाय, हमारे पास था, और जैसा कि कई लोगों ने टिप्पणी की है, दो विश्व युद्ध नहीं हैं। 18 साल के युवाओं की एक और फसल तैयार करने के लिए 20 साल के अंतराल के साथ एक था।

वे बाल की ओर मुड़े और मर गए, और हम उनके टुकड़ों को जोड़ने की कोशिश कर रहे हैं। 75 साल बाद, हम अभी भी ऐसा करने की कोशिश कर रहे हैं, और हम यह काम बहुत अच्छे ढंग से नहीं कर रहे हैं।

मैं इसके बारे में थोड़ी देर में और बताऊँगा। ठीक है, अब वे और ज़्यादा पाप करते हैं। वे अपनी चाँदी से अपने लिए मूर्तियाँ बनाते हैं।

हम अपने पैसे से खुद की देखभाल करने के लिए पूजा करने के लिए चीजें बनाते हैं, जैसे कि एक जापानी बेसबॉल खिलाड़ी को 700 मिलियन डॉलर का भुगतान करना। 700 मिलियन डॉलर। ओहतानी। ओहतानी। हाँ। तो, यह बात है।

हम अपनी चाँदी का इस्तेमाल खुद को एक मूर्ति बनाने के लिए कर रहे हैं। एक ऐसा व्यक्ति जो छोटी सी गोल चीज़ को पकड़ने या छोटी सी गोल चीज़ को मारने में वाकई माहिर है। अब, मैं चाहता हूँ कि आप श्लोक 2 और 3 को देखें, और मैं देखना चाहूँगा कि क्या आपको वही माहौल मिलता है जो मुझे मिलता है, या अगर मिला, तो क्या आपने अपना होमवर्क किया है।

अब, वे और भी ज़्यादा पाप करते हैं। वे अपनी चाँदी से अपने लिए मूर्तियाँ बनाते हैं—बड़ी चतुराई से गढ़ी हुई मूर्तियाँ, वे सब कारीगरों का काम हैं।

इन लोगों के बारे में कहा जाता है कि वे मानव बलि चढ़ाते हैं। वे बछड़े की मूर्तियों को चूमते हैं। इसलिए, वे सुबह की धुंध की तरह होंगे, सुबह की ओस की तरह जो गायब हो जाती है, खलिहान से उड़ती हुई भूसी की तरह, खिड़की से बाहर निकलते धुएँ की तरह।

उन दो छंदों के बीच भावना में क्या अंतर है? ठीक है, हाँ, मुझे लगता है कि यह एक बात है। और क्या? छंद 3 कैसा लगता है? निराशाजनक? मायावी? खोखला? खाली? मृत? छंद 2 भरा हुआ है। यह सभी प्रकार की चीजों से भरा हुआ है।

ये वाक्य एक दूसरे पर गिरते हैं। फिर, पद 3 में, यह खालीपन का एहसास है: धुंध, ओस, भूसा, धुआँ।

शक्तिशाली कविता। शक्तिशाली कविता। हमने अपने जीवन को धुंध, ओस, भूसा और धुएँ से भर दिया है।

पद 4, परन्तु जब से तुम मिस्र से निकले हो, तब से मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ, तुम मुझे छोड़ कर किसी परमेश्वर को नहीं जानते, मेरे छोड़ कर किसी उद्धारकर्ता को नहीं जानते। मैं ने जंगल में, और तपती हुई भूमि में तुम्हारी चिन्ता की।

अब यह वह सवाल है जो हमें लगातार खुद से पूछना चाहिए। मुझे भगवान की सेवा क्यों करनी चाहिए? और यहाँ एक गलत जवाब है। इसे मत दीजिए।

यह श्लोक क्या कहता है? ये दो श्लोक क्या कहते हैं? हमें परमेश्वर की सेवा क्यों करनी चाहिए? क्योंकि उसने हमारे लिए क्या किया है, न कि इसलिए कि हम उससे क्या पा सकते हैं। परमेश्वर ने मेरे लिए हाल ही में और फिर से क्या किया है? खैर, उसने मेरे लिए बहुत कम किया है। मैं ही वह व्यक्ति हूँ जिसने शिक्षा प्राप्त की है।

मैं ही वह व्यक्ति हूँ जिसे नौकरी मिली है। मैं ही वह व्यक्ति हूँ जिसने दुनिया की सबसे प्यारी लड़की से शादी की है। मैं ही वह व्यक्ति हूँ, भगवान ने मेरे लिए क्या किया है? मैं उसके बिना भी बहुत अच्छे से रह सकता हूँ, धन्यवाद।

अगर हम उससे जो कुछ भी प्राप्त कर सकते हैं, उसके लिए उसकी सेवा करते हैं, तो यह पर्याप्त नहीं होगा। लेकिन अगर हम उससे प्रेम के लिए, उसने हमें जो कुछ भी दिया है, उसके लिए उसकी सेवा करते हैं, तो हे भगवान, आपने वहाँ सभी 'मैं' को सुना है। उसने मुझे ईश्वरीय माता-पिता दिए, मुझे बहुत अच्छा स्वास्थ्य दिया, मुझे एक उचित रूप से अच्छा दिमाग दिया, आदि, आदि, आदि।

हे भगवान, इसमें से कुछ भी मेरा नहीं है। यह सब उसका है। लेकिन यहीं पर एक वाटरशेड है।

आपके जीवन में आशीर्वाद के लिए कौन जिम्मेदार है? आप या भगवान? और अगर हम वहाँ जाएं तो यह बहुत आसान है जब मैंने उन्हें खाना खिलाया, तो वे संतुष्ट हो गए। जब वे संतुष्ट हो गए, तो वे घमंडी हो गए। और फिर वे मुझे भूल गए।

हाँ, हाँ। भगवान ने संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए क्या किया है, उसने हमारे लिए क्या किया है, जब मैंने उन्हें खाना खिलाया, तो वे संतुष्ट हो गए। जब वे संतुष्ट हो गए, तो उन्हें गर्व हुआ।

और फिर वे मुझे भूल गए। यह दिलचस्प है कि बाइबल में - मुझे लगता है कि मैंने शायद पहले भी इस पर टिप्पणी की है - धन्यवाद और प्रशंसा समानार्थी शब्द हैं। बाइबल में वस्तुतः सभी धन्यवाद परमेश्वर को स्वयं के लिए निर्देशित हैं।

मैंने कुछ समय पहले इस पर अध्ययन किया था और मैं काफी हैरान था। बाइबल में धन्यवाद के अधिकांश भाव ईश्वर के लिए हैं, न कि उसके द्वारा हमें दिए गए उपहारों के लिए, न ही उसके द्वारा मेरे लिए किए गए कार्यों के लिए, बल्कि उसके व्यक्तित्व के लिए। इसलिए, यही कारण है कि यह एक तरह की एकल अवधारणा है।

ईसाई जीवन में कृतज्ञता अत्यंत आवश्यक है। हमें कभी नहीं भूलना चाहिए कि परमेश्वर कौन है और वह अपनी अच्छाई में अपने चरित्र को कैसे प्रदर्शित करता है। ओह, प्रभु को धन्यवाद दें, क्योंकि वह अच्छा है, और उसकी वफादारी हमेशा के लिए है।

जैसे ही हम इसे भूलना शुरू करते हैं, हम मुसीबत में पड़ जाते हैं। क्योंकि हम अपने हाथों और दिमाग के कामों की पूजा करने लगते हैं, मैंने ऐसा किया।

मैंने यह काम पूरा कर लिया। नहीं, आपने नहीं किया। नहीं, आपने नहीं किया।

तुम्हारे पिता ने कृपापूर्वक तुम्हारे माध्यम से इसे पूरा किया। इसे मत भूलना। इसे मत भूलना।

किसी ने कहा कि मुझे समझ में नहीं आता कि भगवान ने यहूदियों को क्यों चुना। ओह, मुझे समझ में आता है। वे हममें से बाकी लोगों के लिए बहुत बढ़िया उदाहरण हैं।

इसलिए, मैं उनके लिए शेर की तरह बनूंगा। एक तेंदुए की तरह, मैं रास्ते में छिपकर रहूंगा। एक भालू की तरह, जिसके बच्चे छीन लिए गए हैं, मैं माँ भालू के साथ खिलवाड़ नहीं करना चाहता।

मैं उन पर हमला करूँगा और उन्हें चीर डालूँगा। शेर की तरह मैं उन्हें खा जाऊँगा। कोई जंगली जानवर उन्हें फाड़ डालेगा।

तो, सवाल यह है कि क्या यह सिर्फ एक निराश तानाशाह का गुस्सा है? हम यहाँ किस बारे में बात कर रहे हैं? क्या हो रहा है? प्रदाता से शिकारी तक। ओह-हह। और ऐसा क्यों होता है? उनकी अवज्ञा के कारण, एक प्यारे पिता के अनुशासन के कारण।

हाँ? हाँ? ठीक है, उन्होंने दूसरे देवताओं को चुना है, और वह ईर्ष्या के कारण अपने प्रिय के लिए लड़ रहा है। उह-हह। चलिए रोमियों के अध्याय 1 पर चलते हैं। वहाँ एक नया नियम है।

मैं यह जानता हूँ। श्लोक 18, परमेश्वर का क्रोध स्वर्ग से उन सभी लोगों की अधर्मिता और दुष्टता के विरुद्ध प्रकट हो रहा है जो अपनी दुष्टता से सत्य को दबाते हैं। क्या यह एक दिलचस्प वाक्यांश नहीं है? हम दुष्टों को समृद्ध होते देखते हैं और हमें सत्य का एहसास नहीं होता।

सच्चाई यह है कि यह हमेशा नहीं चलेगा। जो अपनी दुष्टता से सच्चाई को दबाते हैं। अब, मैं आपका ध्यान विशेष रूप से इस ओर आकर्षित करना चाहता हूँ।

चूँकि ईश्वर के बारे में जो कुछ भी जाना जा सकता है वह उनके लिए स्पष्ट है क्योंकि ईश्वर ने उन्हें यह स्पष्ट कर दिया है। अब, जैसा कि हमने आज शाम से पहले कहा है, हमारी संतुष्टि में, हमारी पूर्णता में, हमारी सहजता में, ऐसा लग सकता है कि हमें ईश्वर की आवश्यकता नहीं है। लेकिन उस स्थान पर पहुँचें जहाँ आपके संसाधन पर्याप्त नहीं हैं, और ईश्वर का अस्तित्व बहुत स्पष्ट है।

युद्ध के मैदान में वे लोग जिनके मुँह गंदगी से भरे हैं, जब सब कुछ गिरने लगता है, तो वे क्या करते हैं? वे प्रार्थना करते हैं। वे प्रार्थना करते हैं। मैंने पिछले हफ़्ते ही एक किताब पढ़ी थी जिसमें एक आदमी ने कहा था, मैं हैरान रह गया।

मुझे नहीं पता कि वह प्रार्थना कहाँ से आई। यह सिर्फ इसलिए थी क्योंकि मैं बहुत डरी हुई थी। हाँ।

क्योंकि परमेश्वर के अनदेखे गुण, सनातन सामर्थ्य, और ईश्वरीय स्वभाव जगत की रचना के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहां तक कि वे निरुत्तर हैं। अब, यहां, अंत में मैं आपका ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहता हूँ—श्लोक 21।

क्योंकि यद्यपि वे परमेश्वर को जानते थे, जानते थे कि परमेश्वर अस्तित्व में है, जानते थे कि एक दिव्य शक्ति है, फिर भी उन्होंने क्या नहीं किया? उन्होंने उसे परमेश्वर के रूप में महिमा नहीं दी

और धन्यवाद नहीं दिया। और ध्यान दें कि इसमें क्या लिखा है: उसने स्वयं के लिए उसे धन्यवाद नहीं दिया। और इसलिए, परिणाम क्या हुआ? उनकी सोच व्यर्थ हो गई, और उनके मूर्ख हृदय अंधकारमय हो गए।

हालाँकि उन्होंने बुद्धिमान होने का दावा किया, लेकिन वे मूर्ख बन गए और अमर परमेश्वर की महिमा को नश्वर मनुष्यों और पक्षियों और जानवरों और सरीसृपों की तरह दिखने वाली मूर्तियों के लिए बदल दिया। इसलिए, परमेश्वर ने उन्हें उनके दिलों की पापी इच्छाओं में यौन अशुद्धता के लिए छोड़ दिया ताकि वे एक दूसरे के साथ अपने शरीर को अपमानित करें। अब, हमने शुरुआत कर दी है, और परमेश्वर का क्रोध प्रकट हो रहा है।

हमने अभी जो श्लोक पढ़ा है उसके अनुसार परमेश्वर का क्रोध कैसे प्रकट हो रहा है? उन्हें सौंप देना। तो, यह कोई लाल चेहरे वाला तानाशाह नहीं है जो कह रहा है, तुम मेरे साथ ऐसा नहीं कर सकते, मैं तुम्हें पकड़ लूंगा, मैं तुम्हें मार डालूंगा, मैं तुम्हें चीर डालूंगा, तुम मेरे साथ ऐसा नहीं कर सकते। यह परमेश्वर कह रहा है कि तुमने एक रास्ता चुना है, और वह रास्ता मौत है।

मैं तुम्हें उस रास्ते पर चलने दूँगा। मैं तुम्हें उस रास्ते पर चलने दूँगा। अब, यह दिलचस्प है; हम इस तरह से इसके बारे में बहुत ज़्यादा नहीं सोचते हैं, लेकिन यौन विकृति जीवन में परिणाम नहीं देती है।

बच्चे पैदा नहीं होते। इसका परिणाम मृत्यु है। मानव जाति के लिए मृत्यु, अगर यह लंबे समय तक जारी रहा।

तो हाँ, हमारे पास खतरे, आपदा के बारे में यह मजबूत काव्यात्मक भाषा है जो ईश्वर की महिमा करने या उसे धन्यवाद देने से इनकार करने से आती है, लेकिन हमें लगातार यह सोचना होगा कि ईश्वर का क्रोध व्यक्तिगत प्रतिशोध के अर्थ में व्यक्त नहीं होता है। अरे हाँ, वह एक व्यक्ति है, वह आहत है, वह क्रोधित है, लेकिन जो न्याय हम पर आता है वह न्याय है जो केवल कारण और प्रभाव का मामला है। जिस तरह से जीने के लिए आप नहीं बने हैं, उस तरह से जिएँ, और यह अच्छा काम नहीं करेगा।

यह आपके खुद के विनाश के लिए काम करेगा। बिल्कुल, बिल्कुल, बिल्कुल। रोमियों का वह पहला अध्याय, खास तौर पर 18 से - अच्छा, पहला अध्याय अपने आप में एक महान अध्याय है, लेकिन खास तौर पर हमारे अस्तित्व की प्रकृति के बारे में सोचने के लिए, श्लोक 18 से अध्याय के अंत तक अद्भुत है।

ठीक है। तुम नष्ट हो गए, इस्राएल, क्योंकि तुम मेरे खिलाफ हो, अपने सहायक के खिलाफ हो। वे जीवन को विपरीत दिशा में जीने की कोशिश कर रहे हैं और आश्चर्य करते हैं कि यह क्यों दुख देता रहता है।

अब, मैं आपके साथ इस बारे में थोड़ा और सोचना चाहता हूँ। जब हम परमेश्वर के अधीन नहीं होते तो जीवन क्यों नहीं चलता, और जब हम उसके अधीन होते हैं तो जीवन क्यों चलता है? हाँ, हाँ। उसने जीवन को कैसे काम करने के लिए डिज़ाइन किया है? जब आप अच्छे जीवन के बारे

में सोचते हैं, तो उसमें क्या शामिल है? हाँ, उसके साथ मेरे रिश्ते में एक दूसरे के साथ संबंधों में समस्याएँ हैं।

भगवान ने दुनिया को रिश्तों के लिए बनाया है। अब, स्वस्थ रिश्तों के लिए क्या ज़रूरी है? भरोसा, भरोसा। आपकी पत्नी आप पर भरोसा कर सकती है।

आपके बच्चे आप पर भरोसा कर सकते हैं। आपका पड़ोसी आप पर भरोसा कर सकता है, और अगर आप एक भरोसेमंद व्यक्ति बनना चाहते हैं तो इसके लिए क्या ज़रूरी है? नैतिक ईमानदारी कहाँ से आती है? ईश्वर पर भरोसा रखें। अगर आप जानते हैं कि आपका जीवन ईश्वर के हाथों में है और वे हाथ अच्छे हैं, तो आपको लालच करने की ज़रूरत नहीं है।

आपको अपने पड़ोसियों के पास जो है, उसके लिए लालच करने की ज़रूरत नहीं है। यह वास्तव में भरोसे से शुरू होता है, एक भरोसेमंद ईश्वर पर। फिर से, मुझे माफ़ करें। आपने मुझे यह कई बार कहते सुना होगा, लेकिन मैं इसे फिर से कहूँगा।

परमेश्वर ने अब्राहम से क्यों शुरुआत की? उसने उसे अनंत जीवन की पेशकश नहीं की। उसने उसे स्वर्ग की पेशकश नहीं की। उसने उसे उद्धार की पेशकश नहीं की।

उसने कोई भी अच्छी आध्यात्मिक चीज़ नहीं दी। उसने कहा, मैं तुम्हें ज़मीन का एक टुकड़ा देना चाहता हूँ, और मैं तुम्हें एक बच्चा देना चाहता हूँ, और मैं तुम्हें प्रतिष्ठा देना चाहता हूँ। हं? जैसा कि मैंने कई बार कहा है, ज़मीन में आध्यात्मिकता जैसी कोई चीज़ नहीं होती, खासकर तुम्हारे नाखूनों के नीचे।

और सुबह 3 बजे डायपर भरे हुए बच्चे में कुछ भी आध्यात्मिक नहीं है। और प्रतिष्ठा, हमें इसे छोड़ देना चाहिए, है न? भगवान क्या कर रहे हैं? वह शैतान का मुकाबला कर रहे हैं। शैतान ने हव्वा और आदम को यह विश्वास दिलाया कि भगवान भरोसेमंद नहीं है।

वह आपके पक्ष में नहीं है। वह आपको वह नहीं देना चाहता जिसकी आपको ज़रूरत है। वह अपना खेल खेल रहा है।

आप अपना जीवन उसे दे देते हैं, और वह शायद आपको विल्मोर, केंटकी या अफ्रीका जैसी जगहों पर भेज देगा। आप ईश्वर पर भरोसा नहीं कर सकते। और ईश्वर शून्य से शुरुआत कर रहा है।

कई बार कहा है, सभी स्वर्गदूतों ने अपनी साँस रोक ली। तुम क्या सोचते हो, माइकल? क्या वह ऐसा करेगा? पिछले 25 ने ऐसा नहीं किया।

मुझे पूरा भरोसा है कि अब्राहम पहला व्यक्ति नहीं था जिसे भगवान ने यह प्रस्ताव दिया था। और मुझे आश्चर्य है कि क्या उनका घर एक सप्ताह पहले जल गया था या कुछ और हुआ था। या अब्राहम ने अपनी नौकरी खो दी थी।

या फिर उन्होंने अपनी कार को बर्बाद कर दिया। या फिर उनका ऊँट, जैसा भी मामला हो। क्योंकि जैसा कि हमने बार-बार कहा है, हमें उस जगह पर लाने के लिए एक संकट की आवश्यकता होती है जहाँ हम उस पर भरोसा करने का साहस कर सकें।

तो, अगर कोई भरोसेमंद ईश्वर है, तो मैं आज़ाद हूँ। इस मार्कर के लिए माफ़ी चाहता हूँ। मुझे हड़पने वाला बनने की ज़रूरत नहीं है।

मेरे पड़ोसी को इस बात की चिंता नहीं करनी पड़ती कि मैं उसकी चीज़ें चुरा लूँगा या नहीं, जब वह सप्ताहांत के लिए बाहर गया हुआ है। शादी यही होती है। एक लाभदायक साझेदारी।

दोनों पक्षों के लिए लाभदायक। और दुनिया के लिए भी लाभदायक। और जब हम अपनी आँखों के सामने विवाह को नष्ट होते देखते हैं, तो हम एक ऐसी राह पर चल रहे होते हैं जहाँ दोनों तरफ शेर छिपे होते हैं।

माँ भालू जो अपने शावकों को खो चुकी है। क्योंकि हम समर्पण नहीं करेंगे, हम उसे यह साबित करने का मौका नहीं देंगे कि वह भरोसेमंद है।

मुझे भजन 46 बहुत पसंद है। कोविड के दौरान हर कोई इसे उद्धृत करना पसंद करता था। यहाँ लिविंग ओसवाल्ड संस्करण है।

शांत हो जाओ और जान लो कि मैं ईश्वर हूँ। किंग जेम्स कहते हैं कि शांत रहो और जान लो कि मैं ईश्वर हूँ। लेकिन यह शांत है।

इधर-उधर भागना बंद करो। अपनी सारी समस्याओं को खुद सुलझाने की कोशिश करना बंद करो। भरोसा करो और आज़ा मानो।

ठीक है भगवान, मैं तुम्हें अपना जीवन जीने दूँगा। मैं तुम्हें यह दिखाने दूँगा कि तुम कितने भरोसेमंद हो। और मैं आज रात तुम्हारे सामने खड़ा होकर कह सकता हूँ, हे भगवान, वह हर तरह से भरोसेमंद रहा है।

पूरी तरह से। लेकिन यह सच है। अगर आप अपना जीवन परमेश्वर को सौंप सकते हैं, तो आप एक भरोसेमंद व्यक्ति हो सकते हैं।

और अगर आप भरोसेमंद हैं, तो ऐसी संभावना है। यह किसी भी तरह से सिर्फ़ शादी नहीं है। लाभदायक साझेदारियाँ जो जीवनदायी हों और अच्छे परिणाम दें।

और देखो, तुम्हारा राजा कहाँ है जो तुम्हें बचा सके? तुम्हारे सारे नगरों में तुम्हारे हाकिम कहाँ हैं? जिनके विषय में तुमने कहा था, कि मुझे एक राजा और हाकिम दे दो। सो क्रोध में आकर मैंने तुम्हें एक राजा दे दिया।

क्रोध में आकर मैंने उसे दूर कर दिया। तेरे अपराध का लेखा-जोखा रखा गया है। उसके पाप अभिलेख में रखे गए हैं।

जब हम ईश्वर पर भरोसा नहीं करेंगे, तो हम अपने राजनीतिक शासकों से क्या उम्मीद कर सकते हैं? और उनसे ऐसी उम्मीद करके, हम उन्हें किस चीज की सजा देंगे? बिल्कुल। वे सफल नहीं हो सकते। यह असंभव है।

और अगर मैं यहाँ राजनीतिक हो जाऊँ तो मुझे माफ़ करें, लेकिन मैंने इस बारे में फिर से काफ़ी सोचा है। हमारे देश में सरकार के बारे में सोचने के दो तरीके हैं। सरकार मेरी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए मौजूद है।

सरकार मेरी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए है। हमारे संस्थापक पिताओं ने जब संविधान बनाया था, तब से मैं कोविड के बाद से ही बेहतरीन पाठ्यक्रमों की दीवानी हो गई हूँ, और मैं अभी संविधान के निर्माण पर एक पाठ्यक्रम देख रही हूँ। बहुत रोचक है।

यही वह बात है जिस पर वे पूरी गर्मियों में लड़ते रहे, कि हमें अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए किस तरह की सरकार चाहिए? हमारे पास सीनेट होने का कारण यह है कि परिसंघ के तहत, एक राज्य के पास एक वोट था, और यह अराजकता थी, लेकिन रोड आइलैंड और डेलावेयर जैसे राज्य इसे छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे, इसलिए हमारे पास सीनेट है। लेकिन अगर राजा को मेरी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए मौजूद रहना है, तो यह खत्म हो गया है। यह खत्म हो गया है।

कृपया। यदि आप पश्चाताप करने से इनकार करते हैं, तो आपके पापों का रिकॉर्ड कभी नहीं भुलाया जाएगा। लेकिन यदि आप पश्चाताप करते हैं, तो आपका नाम उसके हाथों पर लिखा जाता है।

हाँ, हाँ, नहीं, नहीं।

एप्रेम बन जाता है, और वह जो कर रहा है वह यह है कि वह दो व्यक्तियों, यहूदा और एप्रेम, दक्षिण और उत्तर के साथ खेल रहा है। इसलिए, एप्रेम उत्तरी राज्य के लिए सिर्फ एक कोड शब्द है। लेकिन इस समय तक, उत्तरी राज्य का क्षेत्र ज्यादातर एप्रेम के क्षेत्र तक सिमट गया है।

तो, यह कवितात्मक है, एक बड़ी संस्था के लिए एक अलंकार है, लेकिन यह ऐतिहासिक रूप से भी सटीक है क्योंकि नप्ताली और इस्साकार और जबूलून और आशोर, वे सभी चले गए हैं। गाद और रूबेन चले गए हैं। तो, मनश्शे का अधिकांश भाग चला गया है।

इसका एक हिस्सा अभी भी वहाँ है। इसलिए, जैसा कि मैं कहता हूँ, यह पूरे उत्तरी क्षेत्र के लिए काव्यात्मक है, लेकिन ऐतिहासिक रूप से भी सटीक है क्योंकि हम यहीं हैं। प्रसव पीड़ा के दौरान एक महिला की तरह उसे दर्द होता है, लेकिन वह बिना बुद्धि वाला बच्चा है।

बच्चा कहता है, अरे, मैं यह जगह छोड़कर नहीं जा रहा हूँ। यह आरामदायक है। मेरी सारी ज़रूरतें पूरी हो जाती हैं।

तुम चाहते हो कि मैं ठंडी दुनिया में चला जाऊँ? भूल जाओ। जब समय आता है, तो उसे गर्भ से बाहर आने की भी समझ नहीं होती। अब, श्लोक 14 में, लैटिन शब्द है क्रक्स इंटरप्रिटम, एक व्याख्यात्मक चौराहा, एक समस्या।

मेरा कहना है कि मैं इस लोगों को कब्र की शक्ति से छुड़ाऊंगा। मैं उन्हें मृत्यु से छुड़ाऊंगा। हे मृत्यु, तेरी विपत्तियाँ कहाँ हैं? हे कब्र, तेरा विनाश कहाँ है? मैं कोई दया नहीं करूँगा।

अब, NIV ने, हे कब्र, तेरा विनाश कहाँ है, और मुझे कोई दया नहीं आएगी, के बीच एक रिक्त स्थान रखा है, लेकिन कोई रिक्त स्थान नहीं है। यह पद में केवल अंतिम कथन है। हुह? हम उन सभी बातों को एक साथ कैसे रख सकते हैं जो उसने कही और जो वह अगले पद में कहने जा रहा है? और फिर आपको याद होगा कि 1 कुरिन्थियों 15 में, पॉल ने उस पद के उत्तरार्द्ध को उद्धृत किया है।

हे मृत्यु, तेरा डंक कहाँ है? हे कब्र, तेरी जीत कहाँ है? और वह स्पष्ट रूप से इसके बारे में सकारात्मक शब्दों में बात कर रहा है। इसका मतलब यह है कि ऐतिहासिक रूप से, इस श्लोक को सकारात्मक रूप से पढ़ा जाता रहा है, बस यहाँ बीच में अटका हुआ है। लेकिन हाल ही में, एक सुझाव दिया गया है, जो मेरे लिए, काफी हद तक समझ में आता है।

और वह यह है कि, वास्तव में, शुरुआती दो वाक्य अलंकारिक प्रश्न हैं। क्या मैं इस लोगों को कब्र की शक्ति से छुड़ाऊँ? क्या मैं उन्हें मृत्यु से छुड़ाऊँ? हे मृत्यु, तुम्हारी विपत्तियाँ कहाँ हैं? हे कब्र, तुम्हारी जीत कहाँ है? अब, हम इसे साबित नहीं कर सकते क्योंकि हिब्रू में अलंकारिक प्रश्नों को चिह्नित करने का कोई तरीका नहीं है। यदि यह एक सांकेतिक प्रश्न है, तो आप कहाँ हैं? फिर, आपके पास एक प्रश्नवाचक रूप है जिसका उपयोग किया जा सकता है।

लेकिन यह ऐसा ही है। क्या मैं ऐसा करूँ? बिलकुल अंग्रेजी की तरह। क्या मैं आपके लिए यह करूँ? हाँ में जवाब दें।

क्या मैं तुम्हारे लिए यह करूँ? उत्तर न. तो, मुझे लगता है कि यह सही समझ है, कि यहाँ यह नकारात्मक है, कि वह मौत को बुला रहा है। मैं भालू हूँ।

मैं शेर हूँ। मैं तेंदुआ हूँ। आओ, मौत।

चलो। क्या मैं सिर्फ़ उन लोगों को मुक्ति देने जा रहा हूँ जिन्होंने पश्चाताप नहीं किया है, जो अपने पाप से दूर नहीं हुए हैं? नहीं, मैं ऐसा नहीं करने जा रहा हूँ। मैं उनके निरंतर, संतुष्ट, भूले हुए पाप में उन पर दया नहीं करने जा रहा हूँ।

अब, मैं स्वर्ग में जाता हूँ और होशे से मिलता हूँ, और वह कहता है कि यह कोई सवाल ही नहीं था। मैं हाँ कहूँगा, सर, क्योंकि हमने उसे अन्य स्थानों पर आगे-पीछे जाते देखा है।

और इसलिए, यहाँ यह संभव है कि यह फिर से, भगवान का कहना है, हाँ, अल्पावधि में यह विनाश है, लेकिन दीर्घावधि में मैं उन्हें छुड़ाने जा रहा हूँ। किसी भी मामले में, पॉल उन वाक्यांशों का उपयोग इसी तरह कर रहा है। भगवान का शुक्र है।

यीशु मरे हुएों में से जी उठा है। हे मृत्यु, तेरे पास कोई डंक नहीं है। हे कब्र, तेरे पास कोई विजय नहीं है।

प्रभु की स्तुति हो। अब, मुझे लगता है कि यह संभव है कि पौलुस ने इसे इसके मूल संदर्भ में नकारात्मक रूप में समझा हो। लेकिन वह कह रहा है कि परमेश्वर के छुटकारे के इतिहास के दौरान, उसने तस्वीर बदल दी है।

और अब मसीह आ चुका है और मृतकों में से जी उठा है। और इसलिए, जबकि होशे के दिनों में मृत्यु विजयी थी और इस्राएल बंधुआई में चला गया और मर गया, इतिहास में परमेश्वर के कार्य के दौरान परमेश्वर की स्तुति करो। उसने इसे चारों ओर बदल दिया है।

और मौत में कोई डंक नहीं होता। कब्र में कोई जीत नहीं होती। इसलिए, मुझे लगता है कि दोनों ही तरीके संभव हैं।

लेकिन पॉल ने जो कहा वह इस सबका निष्कर्ष है, और यही इसे पढ़ने का सही तरीका है। क्या मैंने अब आपको भ्रमित कर दिया है? क्या आप समझ रहे हैं कि मैं क्या कह रहा हूँ? बढ़िया सवाल। मुझे लगता है कि मुद्दा पापी से यह कहना है कि जब तक आप अपने सोचने के तरीके को मौलिक रूप से नहीं बदलते, जब तक आप अपने विश्वास के ढांचे को मौलिक रूप से नहीं बदलते, तब तक आप इस स्थिति से जीवित नहीं निकल पाएंगे।

तुम यहाँ से ज़िंदा नहीं निकल पाओगे। इसलिए, मुझे लगता है कि यह चेतावनी देने के लिए है कि अगर तुम उसी रास्ते पर चलते रहे जिस पर तुम चल रहे हो तो तुम्हारे सामने क्या होगा। लोग कहते हैं, तुम जानते हो, ओह ठीक है, तुम जानते हो, नरक पर उपदेश मत दो।

क्यों नहीं? क्यों नहीं? हर बार नहीं। अरे नहीं, नहीं, नहीं। अगर आप पाप के बारे में बात करेंगे तो लोग नाराज़ हो जाएंगे।

आप ऐसा नहीं करना चाहेंगे। हाँ, हाँ, हाँ, हाँ। ठीक है, प्रभु की ओर से एक पूर्वी हवा रेगिस्तान से बहकर आएगी।

उसका झरना सूख जाएगा, उसका कुआँ सूख जाएगा, और उसके भण्डार से सारा खजाना लूट लिया जाएगा। सामरिया के लोगों को अपने अपराध का बोझ उठाना होगा क्योंकि उन्होंने अपने परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया है। अब, यह इस आयत का अंतिम भाग है।

खैर, उस प्राचीन समय में वे सभी लोग बर्बर थे। हम उससे आगे निकल चुके हैं, है न? क्या आपने अखबार पढ़ा है? क्या आपने टेलीविज़न देखा है? वे तलवार से मारे जाएंगे। उनके छोटे बच्चे ज़मीन पर पटक दिए जाएंगे।

उनकी गर्भवती महिलाओं को चीर दिया गया। बिल्कुल, बिल्कुल। हम एक इंच भी आगे नहीं बढ़े हैं।

मानवीय क्रूरता में कोई बदलाव नहीं आया है। केवल ईश्वर ही इसे बदल सकता है। और जब तक वह ऐसा नहीं करता, तब तक एक हजार साल बाद भी यह वैसा ही रहेगा जैसा दो हजार साल पहले था।

हम ऐसे ही हैं, लेकिन हम ऐसे नहीं हैं जैसा हम बनना चाहते हैं। और हमें ऐसा होना भी नहीं है। यह अच्छी खबर है।

यह अच्छी खबर है। मेरे जीवन का सबसे यादगार अनुभव जनवरी 1977 में हुआ था। केंटकी में बर्फबारी हो रही थी।

कैरन तीन छोटे बच्चों के साथ नॉर्थ लेक्सिंगटन एवेन्यू के घर में थी, और कार ड्राइववे में जमी हुई थी। और मैं इज़राइल में था। और हम रिज पर खड़े थे, उस तरफ मुड़े, और आप भूमध्य सागर देख सकते थे।

दिन बिल्कुल साफ था। इधर मुड़ते ही आप 15 मील दूर जॉर्डन घाटी और फिर जॉर्डन की पहाड़ियों और उससे आगे तक देख सकते थे। हवा का तापमान और थर्मामीटर का तापमान 35 था।

और विंडचिल 10 था। 35 मील प्रति घंटे की रफ्तार से हवा हमारी ओर आ रही थी, इतनी ठंडी मानो वह किसी रेफ्रिजरेटर से निकल रही हो। जैसा कि मैंने यहाँ बताया, इसे अरबी में खमसिन कहते हैं।

और यह बिल्कुल सूखा है। यह जिस चीज को छूता है उसे सुखा देता है। और हम सब वहाँ अपने पार्क में सिमटे हुए थे।

और यहाँ एक बेडौइन महिला अपनी बकरियों के साथ थी, जिसने अपने घुटनों के चारों ओर काले वस्त्र लपेटे हुए थे। और हमने अब्राहम और लूत के बारे में बात की। यह वहीं कहीं था, शायद हम जहाँ थे, वहाँ से एक मील से ज़्यादा दूर नहीं, उत्तर या दक्षिण में।

और जब हम 15 मील दूर हरे जॉर्डन नदी में नीचे की ओर देख रहे थे, तो हमारे गाइड ने हमसे कहा, क्या आपको पता है कि अभी वहाँ का तापमान क्या है? 74 डिग्री। अब वह कहता है, कल्पना कीजिए कि अब्राहम और लूत वहाँ खड़े हैं।

अब्राहम शेख है। वह दादा है। उसके पास अपने परिवार में हर किसी पर जीवन-मृत्यु का अधिकार है।

और वह लूट से कहता है, तुम्हें पता है क्या? हमें अलग होना पड़ेगा। हम में से एक को यहाँ रहना होगा और वहाँ जाना होगा। तुम कहाँ रहना चाहोगे? और मुझे पता है कि लूट क्या सोच रहा था।

लूट सोच रहा था, यह बूढ़ा बकरा, वह चाहता है कि मैं कहूँ, ठीक है, मैं यहाँ चट्टानों के साथ रहूँगा और तुम घास ले जाओ। आह, इसकी बहुत संभावना है। मैं घास ले जा रहा हूँ।

और अब्राहम कहता है, सोचो तुमने सही चुनाव किया। आशीर्वाद। वह ऐसा कैसे कर सकता था? उसने सीखा था कि परमेश्वर पर भरोसा किया जा सकता है।

परमेश्वर के हाथ से प्राप्त पत्थर उस घास से बेहतर है जिसे तुमने अपने लिए पकड़ लिया।

धन्यवाद प्रभु यीशु, आपने पिता पर भरोसा किया।

आपने अंत तक उस पर भरोसा किया। आपने उस पर भरोसा किया, यह जानते हुए भी कि उसके हाथ में एक क्रॉस था, लेकिन आपने यह भी माना कि क्रॉस कहानी का अंत नहीं था। धन्यवाद।

धन्यवाद। हे परमेश्वर, आपने हमें इस अच्छी भूमि पर बहुत आशीर्वाद दिया है। हममें से हर एक के पास हमारे लिए काम करने वाले सौ नौकर हैं।

और कितनी आसानी से हम तुम्हें भूल गए हैं। कितनी आसानी से हमने कह दिया है, अच्छा, मैंने जो कुछ पाया है उसके लिए मैंने कड़ी मेहनत की है। हे प्रभु, हम पर दया करो।

हम पर दया करो। क्या तुम हमें वापस अपनी ओर मोड़ोगे? क्या इसके लिए कोई आपदा आएगी? मुझे नहीं पता। लेकिन हमें वापस अपनी ओर मोड़ो, और हम एक राष्ट्र के रूप में अंधकार में एक प्रकाश बन सकते हैं, न कि केवल और अधिक अंधकार।

धन्यवाद प्रभु। इन प्यारे भाइयों और बहनों के लिए धन्यवाद। इस अध्ययन में भाग लेने के लिए उनकी वफ़ादारी के लिए धन्यवाद।

प्रभु यीशु, मैं उनमें से हर एक के लिए प्रार्थना करता हूँ कि आप, खास तौर पर इस क्रिसमस के मौसम में, उन्हें आप पर नया भरोसा दिलाएँ, उनकी देखभाल करने में उनका नया भरोसा दिलाएँ और उनकी हर ज़रूरत को पूरा करने की आपकी क्षमता पर भरोसा दिलाएँ। आपके नाम में, हम प्रार्थना करते हैं। आमीन।